डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्ष, चतुर्थ पत्र

# अज्ञेय के काव्य में बिम्बयोजना

अज्ञेय बिम्बवाद के समर्थक नहीं रहे, परंतु पश्चिम के कुछ बिम्बवादी कवियों से प्रभावित अवश्य थे। उनकी बिम्बयोजना विशिष्ट है। अज्ञेय की कविता में सहजता से ही अनेक बिम्ब आ गए हैं। विभिन्न ऐन्द्रिय संवेदनों से संबंधित बिम्ब अज्ञेय की कविताओं में प्रचुरता से उपलब्ध हैं। घ्राण, श्रवण, दृश्य, आस्वाद्य, स्पर्श इत्यादि बिम्ब अज्ञेय के काव्य को जीवंतता प्रदान करती है। विषय – वस्तुबके सहज चित्रण के सँग – सँग ये ऐन्द्रिय बिम्ब अपनी उपस्थिति से सहजता को भंग नहीं करती पर काव्य क सौंदर्य और प्रभाव कई गुणा बढ़ जाता है। इन ऐन्द्रिय बिंबों में चाक्षुष बिम्ब का सर्वाधिक महत्व है। इसे दृश्य बिम्ब भी कहते हैं, ये वर्ण्यवस्तु को पाठक की आँखों के समक्ष उपस्थित कर देते हैं। दृश्य बिम्ब में कवि शब्दों से ही चित्रांकन कर देता है। अज्ञेय के काव्य में दृश्य – बिम्ब विभिन्न रूपों में उपस्थित है। पाठक इन दृश्य बिंबों की सहायता से कविता पढ़ने के साथ – साथ चित्रात्मकता को भी देखता और अनुभव करता है। इसमें रंग – रूप एवं विभिन्न क्रियाओं की चित्रात्मक उपस्थिति से वर्ण्यवस्तु को कवि पाठकों की आँखों के समक्ष साकार कर देता है। दृश्य बिम्ब की यह विशेषता है कि इसके माध्यम से भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ – साथ रोमांटिक अनुभूतियों एवं दर्शनिक चेतना की भी अभिव्यक्ति अत्यंत सहजतापूर्वक हो जाती है। अज्ञेय की कविताओं में दृश्य बिंबों के कितने ही उदाहरण हैं जो एक ओर बाह्य जगत से प्रकृति – चित्रण, वातावरण चित्रण को जीवंत करते हैं तो दूसरी ओर अंतर्जगत यानि मन के भावों को साकार कर कविता के साथ पाठक के भावों का अनुकूलन कर तादात्म्य उत्पन्न करता है। जैसे –

'अरी ओ करुणा प्रभामय' 'पगडंडी' 'चिड़िया की कहानी' 'पूनो की साँझ' इत्यादि कविताएं दृश्यबिम्बों की दृष्टि से उल्लेखनीय है। इसी प्रकार 'आंगन के पार द्वार' संग्रह की कविता 'दूज का चाँद' दृष्टव्य है –

"मेरे छोटे घर – कुटीर का दीया

तुम्हारे मंदिर के विस्तृत आंगन में सहमा – सा रख दिया गया।"

'दूज का चाँद' इस बिम्ब से कविता एक प्रकार के सामाजिक और आध्यात्मिक बोध से सम्पन्न हो गई है।

दृश्य बिम्ब कवि की भावनाओं और उज़के चिंतन का प्राण – तत्व बनकर अवतरित हुआ है। ' कितनी नावों में कितनी बार' इस संग्रह में दृश्य बिम्ब का अनूठा प्रयोग हुआ है –

"अपने निवेदन का धुआं बन

अपनी अगरबत्ती – सा

मैं चुक जाऊँगा।"

इन पंक्तियों में अगरबत्ती के धुएँ – सा जीवन के धीरे -धीरे चुक जाने का बिम्ब है।

प्रकृति का अपना नियम है, उसमें सबकुछ निर्धारित, निश्चित और नियमित है। फूलों का खिलना और झड़ना, बर्फ का जमना और पिघलना, नदियों का उमड़ना, अमराई का बौराना, कोयल का कूकना इत्यादि प्रकृति के नियम से होता चलता है। अज्ञेय का काव्य दृश्य बिंबों से परिपूर्ण है। ये बिम्ब सहज होने के साथ – साथ यथार्थ, सहज, माँसल, ठोस तथा मानव जीवन से पूर्णतः संबध्द है।

अज्ञेय ने दृश्य बिंबों में रंग को बहुत महत्व दिया है। उदाहरणस्वरूप कुछ बिम्ब प्रस्तुत हैं –

काले मेघ, हरी तलहटी, सुनहली धूप, फूलों की पीली प्यालियाँ, मटमैला सवेरा, सफेद धागे से, पीले गुलाब आदि।

दृश्य बिंबों के अतिरिक्त श्रव्य बिंबों की योजना भी अज्ञेय ऐसा सजीव करते हैं कि पाठक उन ध्वनियों को अपने कानों से जैसे सुनने लगता है। अज्ञेय ने अपने श्रव्य बिंबों में प्रकृति में जल, बादल, पशु – पक्षी, वायु, वृक्ष आदि कितनी ही ध्वनियों की अनूठी पहचान का परिचय दिया है। कोमल – मधुर और परुष दोनों ही प्रकार के ध्वनि बिंबों की योजना कवि ने विलक्षणता से की है। 'कितनी नावों में कितनी बार' संग्रह से एक उदाहरण प्रस्तुत है –

"सागर की धुरधुराहट

सियार की हकलाती हुआँ हुआँ सी

स्मृति के शीशे की

तिड़कन खगों की सीटियाँ

पिपराते पांकड़ चिट्टुकला कांकड़"

गंध बिंब के भी अनेक सजीव बिम्ब अज्ञेय के काव्य में हैं –

"गंध वह उड़ रहा पराग – धूल – झूल"

"बटुली में बहुत दिनों बाद अन्न की सोंधी खुदबुद"

"जेब में सिगरेट की महकती डिबिया"

अज्ञेय के गंध बिंबों की एक खास विशेषता यह है कि इसमें मिट्टी की गंध का उल्लेख बार – बार है –

"बास सोंधी

मुग्ध मिट्टी की

पैरों में बिछ – बिछ जाती

सोंधी गंध उड़ाती”

स्पर्श बिम्ब भी अनेक स्थानों पर काव्य को सजीव रूप देने में सहायक हुआ है –

“मैं ने तुम्हें छुआ है

मेरी मुट्ठियों में भरी हुई तुम”

अज्ञेय के काव्य में बिंबविधान अत्यंत प्रभावशाली है।